ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696, UGC No.
SHODH-DHARA ; JUNE 2019, Vol. 2, P. 14

History

छत्तीसगढ़ की धार्मिक परम्पराओं एवं स्थलों का ऐतिहासिक विश्लेषण

अभिषेक अग्रवाल

शोध छात्र, इतिहास विभाग, गुरू घासीदास (केंद्रीय) विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ० श्रद्धा गर्ग

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, गुरू घासीदास (केंद्रीय) विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

(प्राप्त : ०७ अप्रैल २०१९)

Abstract

छत्तीसगढ़, अतीत काल में दक्षिण कोसल, महाकोसल, नामों से सम्बद्ध रहा है। इस राज्य की अपनी पृथक धार्मिक एवं सामाजिक परम्परायें हैं, जो इसे पूरे देश में उसे अलग स्थान प्रदान करती हैं। छत्तीसगढ़ की अपनी विशिष्ट धार्मिक परम्परायें हैं। यहाँ वैष्णव, शैव और शाक्त तीनों ही सम्प्रदाय के अनुयायी एवं उनके मंदिर अवस्थित हैं तथा इनमे विवाद का कोई भी साक्ष्य यहाँ मौजूद नहीं है। छत्तीसगढ के सिरपुर के गुप्तकालीन कालीन लक्ष्मण मंदिर, राजिम का राजीव लोचन का मंदिर, शिवरीनारायण का राममंदिर, रतनपुर का राममंदिर मे विष्णु प्रतिमाओ की ही प्राचीन स्थापना है। इससे राज्य में वैष्णव मत होने का संकेत मिलता है। साथ ही छत्तीसगढ मे शैव धर्म के प्रचार–प्रसार की जानकारी हमें शिव मंदिर एवं इन मंदिरों में उत्कीर्ण लेखों विभिन्न शासकों के ताम्रपत्र शिलालेखों, अभिलेख मुद्राओं से होती है। मल्हार, खरौद, पाली, ताला, राजिम आदि प्रमुख शैव केन्द्र हैं। छत्तीसगढ मे शक्ति पूजा की परंपरा भी प्राचीन काल से रही है। शक्ति पूजा की परपरा के प्रभाव से १७वीं शताब्दी के पूर्व तक छत्तीसगढ़ में शाक्त धर्म का भी प्रभाव अवश्य रहा होगा। छत्तीसगढ मे शाक्त संप्रदाय के कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल प्राप्त होते हैं। जिनमें रतनपुर, मल्हार, डोंगरगढ, चंद्रपुर प्रमुख हैं। छत्तीसगढ की माटी में सभी धार्मिक सम्प्रदायों के ऐतिहासिक स्थलों की प्राप्ति इस बात का प्रतीक है कि यहाँ पर सभी संस्कृति पल्लवित एवं विकसित हुई।

Figure : 00 **References : 23** **Table : 00**

Key Words : दक्षिण कोशल, वैष्णव, शैव, शाक्त, छत्तीसगढ़ की धार्मिक परंपराएं

किसी भी क्षेत्र के मनुष्य का उसके धार्मिक परम्पराओं से गहरा सम्बन्ध रहता है। मानव के ऐतिहासिक एवं सामाजिक उत्थान का अध्ययन करने के लिए उसके धार्मिक विश्वासों एवं परम्पराओं का अध्ययन आवश्यक है। भारत के केन्द्र में स्थित छत्तीसगढ़ राज्य भी अपनी पृथक धार्मिक मान्यताओं के कारण वैश्विक स्तर अपनी अलग पहचान रखता है।

धान का कटोरे के नाम से प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ राज्य हमेशा से ही देश की खुशहाली का प्रतीक रहा है। आज का यह छत्तीसगढ़, अतीत काल में दक्षिण कोसल, महाकोसल, नामों से सम्बद्ध रहा है। इस राज्य की अपनी पृथक धार्मिक एवं सामाजिक परम्परायें हैं, जो इसे पूरे देश में उसे अलग स्थान प्रदान करती हैं।

"छत्तीसगढ़ एक आदर्श भौगोलिक प्रदेश है, जहाँ भौगार्भिक भौतिक जल निकास जलवायु, भूमि उपयोग, जनसंख्या के लक्षण आदि में आश्चर्यजनक समानता मिलती है।"[1]

Scanned by TapScanner